नवभारत

मुलाकात अब कैरेक्टर तैयार करने का जमाना, विश्व पटल पर उभरता है नाम

बदलती चुनौती से लड़ना सिखाता है IIM

IIM के निदेशक भिमराया मैत्री पहुंचे 'नवभारत'

■ नागपुर, व्यापार प्रतिनिधि. वर्तमान दौर बदल चुका है. पलक झपकते ही चीजें बदल जातीं हैं. ऐसे दौर में शिक्षा क्षेत्र में भी ठहराव संभव नहीं है क्योंकि हमें 'अदृश्य परिस्थितियों' के लिए भी बच्चों को तैयार करना होता है ताकि वे उद्योग का सफलतापूर्वक संचालन कर सकें. इसके लिए उनमें कैरेक्टर तैयार करने की जरूरत होती है ताकि हर पहलुओं का आकलन, मूल्यांकन वे बेहतर तरीके से कर सकें. यह विचार आईआईएम नागपुर के निदेशक भिमराया मैत्री ने रखे.

'नवभारत' पहुंचे मैत्री संपादकीय सहयोगियों से चर्चा कर रहे थे. उन्होंने कहा कि आज के दौर में लर्नर तेजी से आगे बढ़ रहे हैं क्योंकि वे कल्पनाओं की आगे की सोच रहे हैं. यंग कंपनियां ओल्ड कंपनियों के लिए चुनौतियां खड़ी कर रही हैं. गूगल और टेस्ला आदि इसके जीवंत उदाहरण हैं. वे पुरानी कंपनियों को खा रही हैं. ऐसे अनगिनत कंपनियां जिनकी आयु 20 वर्ष भी नहीं है, 80-90 वर्ष पुरानी कंपनियों को नीचे दबा रही हैं क्योंकि इनके पास आइडिया हैं. ऐसी तेजी से बदलती दुनिया में छात्रों को ग्लोबल विजन के साथ तैयार करना ही आईआईएम का काम है. छात्र फियरलेस जॉब करने इस कदर तैयार होते हैं कि वे अपने साथ-साथ कंपनियों को भी ऊंचाइयों पर ले जाते हैं.

नई नीति से होगा समग्र विकास

नई नीति में छात्रों को समग्र विकास के लिए पर्याप्त प्रावधान किए गए हैं. एक-एक छात्र को अलग-अलग करैक्टर बनाने की दिशा में पहल की गई है जो वेल्थ क्रिएशन का काम करेंगे. साथ ही उनमें सामाजिकता, धार्मिकता भी कायम रहेगी. आज केवल एक क्षेत्र के एक्सपर्ट बनकर काम नहीं चल सकता. छात्र को हर पहलू पर फोकस करना होगा. एक काम के परिणाम-सफलता की जानकारी होनी चाहिए. किताबी जानकारी से ज्यादा उन्हें प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा दी जा रही है. टीम बनाकर ये प्रतिस्पर्धा करते हैं. इन्हें सुदूर गांवों में भेज कर असहज वातावरण का ज्ञान भी कराया जाता है ताकि उन्हें डिसकंफर्ट की जानकारी रहे और वे संघर्ष के लिए तैयार हो सके. डिसकंफर्ट से ही रिजल्ट मिलता है और आइडियाज खुलकर निखरता है.

विश्व पटल पर नागपुर रोशन

■ आईआईएम का लाभ यह है कि जहां कहीं भी छात्र जाएंगे, वहां-वहां नागपुर का नाम रोशन होगा. वैसे भी जिन स्थानों पर आईआईएम, आईआईटी होते हैं, उस शहर की पहचान ग्लोबल हो जाती है क्योंकि इंटरनेशनल छात्र भी आते हैं.

■ इन छात्रों द्वारा किए जा रहे कार्यों का लाभ स्थानीय प्रोफेशनल्स और इंडस्ट्रीज को भी मिलता है. छात्रों के स्टडीज और शोध बड़े पैमाने पर उपयोग में लाये जाते हैं. उन्होंने कहा नागपुर में कई विशेषताएं हैं जो शहर को ग्लोबल बनाने में कारगर है. सबसे बड़ी कमी रिसर्च सेंटर का नहीं होना है. रिसर्च एंड इनोवेशन पार्क से यह कमी भी दूर होगी.

टीम वर्क से किसान करें काम

मैत्री ने कहा कि जो किसान कोऑपरेटिव रूप से काम कर रहे हैं, वे खुशहाल हैं. अंगूर, गन्ना उत्पादक एक-दूसरे के साथ मिलकर काम करते हैं लेकिन विदर्भ में साझापन का अभाव है. वे अलग-अलग काम करे रहे हैं, जिसके कारण परिणाम सकारात्मक नहीं मिल रहे और आत्महत्याएं हो रही हैं. किसानों को प्रोसेसिंग पर भी ध्यान देना होगा ताकि अधिक मूल्य मिल सके. आईआईएम जल्द ही केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं को क्रियान्वित करने जा रहा है. आईआईएम को सेंटर फॉर एक्सीलेंस पर एग्रीकल्चर की मान्यता भी दी गई है, जिसके तहत कार्य किए जाएंगे.

Nagpur Edition
01-june-2022 Page No.
epaper.enavabharat.com